SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110005

Post-Event Report

Event	व्याख्यान
Topic	भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच: साम्य और वैषम्य
Organizer	हिंदी साहित्य सभा मंथन ।
Date	24 सितंबर 2025
Time	प्रातः 11:30 बजे
Duration	3 घंटे
Place/Platform	कमरा संख्या 18
Number of Participants	50+
Guest Speaker/Trainer	श्री रवींद्र त्रिपाठी
Welcome Speech	मानसी सिंह

Activities

24 सितंबर 2025 को श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) में हिंदी व हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा 'भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच: साम्य और वैषम्य ' विषय पर एक विशिष्ट संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय रंगमंच और पाश्चात्य रंगमंच की विशेषताओं, उनके विकासक्रम, मंचन शैलियों और तकनीकी पहलुओं की तुलना करना था।

मुख्य वक्ता श्री रवींद्र त्रिपाठी ने सबसे पहले भारतीय रंगमंच की ऐतिहासिक परंपराओं, कथकली, कथक, नाटक और लोक नाट्य रूपों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि भारतीय रंगमंच में भाव, संगीत और नृत्य का मिश्रण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसके पश्चात पाश्चात्य रंगमंच की विशेषताओं जैसे आधुनिक थियेटर, शेक्सपियरियन नाटकों और मंच तकनीकों पर प्रकाश डाला गया।

वक्ता ने दोनों रंगमंच के साम्य और वैषम्य बिंदुओं को रोचक उदाहरणों के माध्यम से दर्शाया। उदाहरण स्वरूप, दोनों में संवाद और पात्र निर्माण महत्वपूर्ण हैं, पर भारतीय रंगमंच में अधिकतर धार्मिक और सांस्कृतिक कथानकों का महत्व होता है, जबकि पाश्चात्य रंगमंच में यथार्थवादी और सामाजिक विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों ने अपने प्रश्न पूछे, जिनका वक्ता ने संतोषजनक उत्तर दिया। सभी उपस्थित छात्रों ने कार्यक्रम को बहुत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताया।

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110005

Main Ideas

- 'भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच: साम्य और वैषम्य' विषय पर आयोजित इस व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य दोनों नाट्य शैलियों की विशेषताओं, विकासक्रम, मंचन शैलियों और तकनीकी पहलुओं की तुलनात्मक विवेचना करना था, जिसका आयोजन हिंदी साहित्य सभा मंथन ने श्री रवींद्र त्रिपाठी के मुख्य वक्ता के रूप में किया।
- वक्ता श्री रवींद्र त्रिपाठी ने बताया कि भारतीय रंगमंच की ऐतिहासिक परंपराओं, जिसमें कथकली और लोक नाट्य रूप शामिल हैं, में भाव, संगीत और नृत्य का मिश्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो इसे पाश्चात्य शैलियों से अलग करता है।
- पाश्चात्य रंगमंच की विशेषताओं में आधुनिक थियेटर, शेक्सपीरियन नाटक और उन्नत मंच तकनीकों पर प्रकाश डाला गया। इसकी विषय-वस्तु भारतीय रंगमंच से भिन्न है, जहाँ मुख्य रूप से यथार्थवादी और सामाजिक विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- निष्कर्षतः, यह व्याख्यान न केवल छात्रों को रंगमंच के इतिहास और तकनीकों को समझने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि उनमें सांस्कृतिक दृष्टिकोण और वैश्विक रंगमंच के प्रति रुचि को भी बढ़ाता है, जिसे उपस्थित सभी प्रतिभागियों द्वारा ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताया गया।

Vote of thanksडॉ. हरदीप कौर

Poster (Attach below)

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110005

Pictures (Attach Five Photos)

Attach Photocopy of two Certificates.-

हस्ताक्षर:

डॉ. अंजुबाला
(विभाग प्रभारी)

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110005